B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-1
HISTORY HONS.
PAPER-1
UNIT-5(IV)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KUMAR MISHRA
DATE-21/09/2020

TOPIC:- प्राचीन भारतीय संस्कृति

ANCIENT INDIAN CULTURE

PART-3

Scanned with CamScanner

प्राचीन भारतीय संस्कृति

मौर्योत्तरकालीन साहित्य

मौर्योत्तरकालीन साहित्य की भाषा प्राकृत एवं संस्कृत थी। प्राकृत अभिलेख की भाषा एवं संस्कृत साहित्य की भाषा के रूप में प्रयोग की जाती थी। दक्षिण भारत के संगम साहित्य की भाषा तमिल थी। जहाँ तक लिपि का प्रश्न है मौर्योत्तर काल में भी ब्राह्मी एवं खरोष्ठी लिपि का प्रयोग ही प्रचलन में था।

मौर्योत्तरकालीन साहित्य को मोटे तौर पर धार्मिक एवं धर्मेतर साहित्य के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। धार्मिक साहित्य के अंतर्गत विविध धर्मों का साहित्य लिखा गया, जैसे बौद्ध, जैन एवं ब्राह्मण आदि। इस काल में धर्मशास्त्र, महाकाव्य, संगम साहित्य आदि बहुविधि साहित्यिक रचनाएँ की गई। सूत्र एवं स्मृतियों की रचना इसी काल में हुई। इन्हें संयुक्त रूप से धर्मशास्त्र कहते हैं। इस क्रम की प्रमुख स्मृतियों में मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति का विशेष महत्व है। मौर्योत्तर काल में कनिष्क के काल में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ। दर्शनशास्त्र की छः धाराओं सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा का विकास इसी काल में हुआ। धर्मेतर साहित्य के अंतर्गत शुद्ध साहित्य, व्याकरण, विज्ञान एवं तर्कशास्त्र की धाराओं का विकास भी इस युग में देखा जा सकता है। धर्मेतर साहित्य में वासवदत्ता, सौंदरानंद, वज्रसूचि आदि का विशेष महत्व है। अश्वघोष अपनी कृतियों के माध्यम से वर्णव्यवस्था तर्कसंगत आलोचना करते हैं। व्याकरण के अंतर्गत इसी युग में पतंजलि ने महाभाष्य की रचना की। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता आदि इस युग की विज्ञान से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं, जो प्राचीन भारतीय चिकित्सा शास्त्र का उल्लेखनीय स्तर प्रस्तुत करती हैं। काम के अंतर्गत वात्स्यायन ने 'कामसूत्र' की रचना की। इसके अंतर्गत विविध विषयों का उल्लेख किया गया है।

निष्कर्षतः मौर्योत्तरकालीन साहित्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष से संबंधित है। यह जीवन के बहुविधि आयाम को प्रस्तुत करती है। इन साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से तात्कालिक समाज के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन की जानकारी मिलती है। निःसंदेह साहित्य अपने युग की झाँकी प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि मौर्योत्तर काल को प्राचीन भारतीय इतिहास का अंधकार युग नहीं कहा जा सकता।

Pankaj
21/09/2020

Scanned with CamScanner